कलीसिया अध्याय 45

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **प्रकाशितवाक्य 8-11**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 8-11) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख पद]* **(18) यूहन्ना 16:14**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।

(18) यूहन्ना 16:14। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी सब बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]* **शैतान और आत्मिक युद्ध**

परिचय। यह शिक्षा शैतान और आध्यात्मिक युद्ध के बारे में है। परमेश्वर सामान्य रूप से यीशु मसीह, पवित्र आत्मा, बाइबल और मण्डली के मसीहीयों के माध्यम से काम करता है। लेकिन विशेष परिस्थितियों में, परमेश्वर परिस्थितियों और उसके स्वर्गदूतों के माध्यम से भी कार्य करता है। हर कोई परमेश्वर के कार्य से आनन्दित नहीं होता। शैतान वरन उसकी ताकतें परमेश्वर और उसके कार्य का विरोध करते हैं और उसे नष्ट करने की कोशिश करते हैं। साथ ही दुनिया के कई दुष्ट लोग यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं और परमेश्वर और उनके कार्य का विरोध करते हैं।

हम जानेंगे कि शैतान और उसके पतन, उसके लक्ष्य, रणनीति और उसकी सीमा के बारे में बाइबल क्या सिखाती है। अंत में हम सीखेंगे कि मसीहियों को शैतान के विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध में क्या करना चाहिए। इसके अलावा मैनुअल 8, पूरक 1 और 2 देखें।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि दो हजार साल पहले यीशु मसीह के पहले आगमन के दौरान शैतान पहले से ही ''बाध्य'' (मत्ती 12:29) और उसकी ताकतें ''निरस्त्र'' (कुलुस्सियों 2:15) हो चुकी हैं। शैतान को बांधना या उस पर अधीकार रखना, मत्ती 12: 28-30, लूका 10: 17-20 और यूहन्ना 12: 31-32 में भी सिखाया जाता है और कुलुस्सियों 1:13, कुलुस्सियों 2:15, इब्रानियों 2:14 और 1 यूहन्ना 3: 8 की पत्रियों में भी। प्रकाशितवाक्य 12:7-9 और प्रकाशितवाक्य 20:1-3 में सर्वनाश करने वाले दृष्यो में शैतान के इस ''बंधन'' का वर्णन है।

क. शैतान और उसका पतन

1. शैतान कौन है?

पढ़ें। प्रकाशितवाक्य 12: 1-9। ***खोजें और चर्चा करें।*** शैतान कौन है?

ध्यान दें। बाइबल हमें वह सब कुछ नहीं बताती जो हम जानना चाहते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में, शैतान को एक विशाल लाल अजगर की तस्वीर में वर्णित किया गया है। वह बहुत बलवान है। वह अदन की वाटिका का प्राचीन जालसाज है(उत्पत्ति 3:1-5)। उसे ''शैतान'' कहा जाता है, जिसका अर्थ है परमेश्वर और उसके लोगों की *निंदा करने वाला।* उसे ''शैतान'' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है परमेश्वर और उसके लोगों का *विरोधी।*

उसके दो उद्देश्य हैं। पद 4-5 में, इतिहास के आरंभ से ही उसे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के आगमन में बाधा डालने की कोशिश के रूप में चित्रित किया गया है जब तक मसीह को देखते-देखते ही उपर उठा लिया गया (प्रेरित के काम 1: 9)।

पद 9 में, शैतान को पूरे संसार को भटकाने वाला कहा गया है। अर्थात, सिर्फ मसीह लोग ही नहीं, वरन संपूर्ण दुष्ट संसार, जो परमेश्वर और उसके पुत्र का विरोध करती है(सीएफ 1 यूहन्ना 5:18-19) ।

2. शैतान का पतन।

(1) शैतान कैसे गिरा।

पढ़ें यहेजकेल 28:11-19; यशायाह 14:12-14; 1तीमुथियुस 3:6। ***खोजें और चर्चा करें।*** शैतान कैसे गिरा?

ध्यान दें। बाइबल सीधे तौर पर शैतान के पतन से सम्बन्धित विवरण नहीं देती। यह केवल शैतान के पतन के सन्दर्भ में इतिहास के दो सामर्थी राजाओं के पतन का वर्णन करती है।

यशायाह 14:12-14 में बाबुल के दुष्ट राजा के पतन को शैतान के पतन के स्वरुप में वर्णित किया गया है। बाबुल एक शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी थी, जो आधुनिक इराक में स्थित है। बाबुल के राजाओं की सदियों से पूरी दुनिया पर राज करने की आकांक्षाएँ थी। बाबुल के राजा और उसके साम्राज्य के पतन के बारे में वैसा ही वर्णन किया गया है जैसे कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने शैतान के पतन के बारें में किया है।

बाबुल के राजा की भांति, शैतान को ''भोर का तारा'' कहा जाता था, क्योंकि यह तारा सुबह में बडी खूबसूरती से चमकता है और हर किसी का ध्यान आकर्षित करता है। हालाँकि, वह अहंकारवश पृथ्वी पर स्वर्ग से विराजमान होना चाहता था और स्वयं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की तरह बनाना चाहता था। अपने आत्मोत्सर्ग और सब कुछ पाने की इच्छा के कारण जो परमेश्वर का था, परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया। बाबुल के दुष्ट राजा ने शैतान के नक्शेकदम पर चलना शुरू कर दिया। वह अपमानित हुआ और अपने सिंहासन से गिर गया। बाबुल का दुष्ट राजा भविष्य के मसीह विरोधी का एक प्रकार या चित्रण बन गया।

यहेजकेल 28:11-19 में सोर के दुष्ट राजा के पतन को शैतान के पतन के समान चित्रित किया गया है। सोर सदियों से फिनिशिअंस के सबसे प्रसिद्ध व्यापारी शहर के रूप में जाना जाता था, जो आधुनिक लेबनान में स्थित है। यह कई द्वीपों से जुड्कर बना था वरन गढ़वाला नगर था। इनके पास व्यापारी जहाजों का एक बड़ा बेड़ा मौजूद था। सोर के राजा और उसके राज्य के अंतिम पतन का वर्णन उस प्रकार किया गया है जैसे कि भविष्यवक्ता यहेजकेल ने शैतान के पतन के बारे में किया है। वाणिज्य में भ्रष्टाचार और हिंसक युद्ध के कारण सोर राज्य का पतन हुआ। सोर का राजा इसलिये गिरा क्योंकि वह अभिमानी हो गया और उसने अपनी बुद्धी भ्रष्ट कर ली।

सोर के राजा की तरह, शैतान को मूल रूप से परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत बनाया था। वह बुद्धिमान और बहुत सुंदर था। वह परमेश्वर की उपस्थिति में मगन रहता था और अदन की वाटिका में भी मौजूद था। जब तक उस में दुष्टता नहीं पाई गयी, वह अपने में निर्दोष था। वह अपनी सुंदरता के कारण *अभिमानी* हो गया और अपने वैभव के कारण अपनी बुद्धि *भ्रष्ट* कर ली। 1तीमुथियुस 3:6 में हमने पढ़ा कि शैतान के अहंकार के कारण परमेश्वर ने उसका न्याय चुकाया। परमेश्वर अभिमान का विरोध करता है (1 पतरस 5:5) और उसे अपनी उपस्थिति से निकाल दिया। उसने उसे स्वर्ग में से निष्कासित कर पृथ्वी पर भेज दिया।

(2) जब शैतान गिरा।

पढ़ें उत्पत्ति 1:31; 3:1। ***खोजें और चर्चा करें।*** शैतान कब गिरा?

ध्यान दें। उत्पत्ति अध्याय 1 के अंत में, हमने पढ़ा कि ''परमेश्वर ने वह सब कुछ देखा जो कुछ बनाया था, सब को देखा कि वह बहुत ही अच्छा था।'' हालांकि, उत्पत्ति 3 में, पुरुष और महिला के पाप में गिरने से पहले, हमने पढ़ा कि शैतान उन्हें एक साँप के रूप में दिखाई दिया और परमेश्वर की अवज्ञा के लिए प्रलोभन दिया। उस समय शैतान पहले से ही निष्कासित प्राणी था जिसने परमेश्वर और उसके कार्य का विरोध किया। इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि अदन की वाटिका में सृष्टि के पूरा होने और आदम और हव्वा के प्रलोभन के बीच शैतान का पतन अवश्य हुआ है। इससे अधिक हम शैतान की उत्पत्ति और पतन के बारे में नहीं जानते हैं।

ख. शैतान के लक्ष्य और योजना

1. शैतान परमेश्वर और उसके लोगों का विरोध करता है।

(1) शैतान परमेश्वर का विरोध करता है।

खोजें और चर्चा करें। शैतान परमेश्वर का विरोध कैसे करता है? ***पढ़ें*** उत्पत्ति 3:1-5।

ध्यान दें। शैतान परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों का विरोधी है। शैतान ने परमेश्वर पर झूठा होने का आरोप लगाया। उसका उद्देश्य था कि आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करें।

(2) शैतान यीशु मसीह का विरोध करता है।

खोजें और चर्चा करें। शैतान ने किन तीन माध्यमों से यीशु को लुभाने की कोशिश की? ***पढें*** लूका 4:1-13। ***ध्यान दें।*** शैतान ने यीशु को उसके मानव स्वभाव में परमेश्वर की अवज्ञा करने के लिए लुभाया। शैतान बहुत वास्तविक और चालाक है।

अपनी प्रथम परिक्षा में, शैतान ने मसीह को परमेश्वर पर अविश्वास करने के लिए लुभाया। उसने भोजन की बुनियादी मानवीय जरूरतों के विषय में यीशु को लुभाया। 40 दिनों के उपवास के बाद, यीशु को भूख लगी। शैतान ने यीशु को परमेश्वर के प्रति अविश्वास करने का प्रलोभन दिया ताकि वह अपनी निर्बलता पर बना रहें। शैतान ने मसीह को परिस्थितियां अपने हाथों में लेकर, और कुछ पत्थरों को रोटी में बदलकर अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने का प्रलोभन दिया। उसने यीशु को परमेश्वर से अलग होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। लेकिन यीशु ने इस परीक्षा पर विजय पा ली।

अपने दूसरी परिक्षा में, शैतान ने यीशु को परमेश्वर को पारित करने और शैतान पर भरोसा करने के लिए लुभाया। उसने सामर्थ के क्षेत्र में यीशु की परीक्षा ली। सम्भवत: एक स्वप्न के माध्यम से, उसने यीशु को संसार के सभी राज्यों को दिखाया। शैतान ने दावा किया कि उसके पास पृथ्वी के सभी राज्यों का स्वामित्व है और और यदि यीशु ने उसको दण्डवत किया, तो वह यीशु को इन सभी राज्यों का स्वामी और प्रधान बना देगा और वह जल्द ही इस संसार के राजा के रूप में स्वीकार किया जाएगा। हालाँकि, शैतान झूठा है(यूहन्ना 8:44), क्योंकि उसने कभी भी इस दुनिया पर स्वामित्व या शासन नहीं किया। परमेश्वर इस संसार का सृष्टिकर्ता है और उसका राज्य युग युग का है (भजन 2:1-12; भजन 145:13; 146:10; यशायाह 14:24-27)। यीशु को संसार के सभी राज्यों का स्वामित्व देकर व उन पर अधिकार और वैभव का आनंद लेने के लिए, शैतान ने अपने यीशु को उसके मानव स्वभाव में लुभाने की कोशिश की ताकि क्रूस की मृत्यु पाये बिना ही उसे मुकुट मिल जाये। यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की योजना यह है कि शैतान की योजनाओं को नाश करे (1 यूहन्ना 3:8) , ताकी संसार को बचाया जा सके (यूहन्ना 3:17) क्योकि स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार उसे ही दिया गया है (मत्ती 28:18; प्रकाशितवाक्य 1:5) । शैतान ने मसीह को एक लघु मार्ग लेने और परमेश्वर की योजना को दरकिनार करने को प्रेरित किया। परन्तु मसीह ने भी इस परीक्षा पर विजय पा ली।

अपनी तीसरी परीक्षा में, शैतान ने मसीह को परमेश्वर और उसके वचन में अविश्वास रखने के लिए लुभाया। उसने मसीह की अप्राकृतिक क्षेत्र में परीक्षा ली। उसने मसीह को कुछ असाधारण और अद्भुत करने के लिए प्रेरित किया, अर्थात् ऊंची इमारत से खुद को गिराने और स्वर्गदूतों को उसे असाधारण तरीके से पकड़ने का विवरण। शैतान ने बाइबल से एक पद भी उद्धृत किया (भजन 91:11-12), लेकिन यीशु का

परमेश्वर में अविश्वास प्रकट करने के लिए, जो इस संदर्भ में सही नही था । उसने मसीह को परमेश्वर पर विश्वास न रखने और स्वयं पर भरोसा रखने हेतु प्रेरित किया। वह चाहता था कि मसीह परमेश्वर का परीक्षण करें कि क्या परमेश्वर वास्तव में परमेश्वर था और क्या उसका वचन (बाइबल) वास्तव में विश्वसनीय हो सकता है। शैतान ने तर्क दिया कि ऊंची इमारत से कूदकर, मसीह यह साबित करेंगे कि परमेश्वर मौजूद है और उन्होंने अपने वचन अनुसार ही किया। उसने मसीह को परमेश्वर और उसके वचन पर अविश्वास रखने के लिए लुभाने का प्रयास किया। लेकिन मसीह ने भी इस परिक्षा पर भी विजय प्राप्त करी!

मत्ती ने इस टिप्पणी के साथ अंत करा कि शैतान ने आखिर में मसीह को छोड़ दिया, ताकि किसी अन्य अवसर पर मसीह की परिक्षा लें।

(3) शैतान सभी का विरोध करता है।

खोजें और चर्चा करें। शैतान बाइबल और उसके संदेश के खिलाफ क्यों है? ***पढ़ें*** लूका 8:11-12। ***ध्यान दें।*** लूका 8:11-12 के दृष्टांत में, यीशु मसीह ने शैतान के मुख्य लक्ष्य का वर्णन किया है। वह कहता है, "बीज परमेश्वर का वचन है। मार्ग के किनारें वे हैं, जिन्होने सुना, तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि ऐसा न हो कि वे *विश्वास करके उद्धार पायें।*" शैतान का मुख्य उद्देश्य बाइबल के सभी वचनों को मानवजाती से दूर रखना है! शैतान नहीं चाहता कि इस संसार में लोग बाइबल पर विश्वास करें और बचाए जाएं। वह नहीं चाहता कि वे नया जीवन पाएं और बेहतर लोग बनें। वह नहीं चाहता कि वे बाइबल के परमेश्वर की सेवा और महिमा करें! शैतान संसार के हर विज्ञान, दर्शन और धर्म के साथ मिलकर काम करेगा जो बाइबल का विरोध करता है! वह बाइबल को नष्ट करने या लोगों को बाइबल सुनने, पढ़ने, अध्ययन करने और पालन न करने के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा! वह झूठे भविष्यद्वक्ताओं को बाइबल के अर्थ को तोडने मरोड़ने व लज्जित करने के लिए प्रेरित करेगा। वह दुष्ट अगुवों को प्रेरित करेगा कि वे लोगों के बाइबल रखने पर रोक लगायें या उसे जब्त करायें।

शैतान (और उसके अनुयायी) बाइबल से इतनी नफरत क्यों करता हैं? क्योंकि बाइबल संसार की एकमात्र पुस्तक है जो यह बताती है कि शैतान वास्तव में कौन है और भविष्यद्वाणी करती है कि उसका अंत क्या है! इसलिए, जब एक मसीही हर राजनीतिक और धार्मिक विरोध के बावजूद बाइबल पढ़ता व अध्ययन करता है और उसका पालन भी करता है, तो वह शैतान का विरोध करता है! तब बाइबल का परमेश्वर उससे बहुत प्रसन्न होता है!

2. शैतान लोगों के दिलों-दिमाग पर वार करता है।

परिचय दें। "शैतान" का अर्थ है "परमेश्वर और उसके लोगों का विरोधी"। ''शैतान'' का अर्थ है ''परमेश्वर और उसके लोगों का निंदक, जो झूठी साक्षी देता है''। शैतान की रणनीति लोगों की अंदरूनी और बाहरी परिस्थितियों पर वार करना है। इफिसियों 6:16 के अनुसार, शैतान के "जलते हुए तीर" मसीहियों

के शरीर, मन और आत्मा पर उसके वारों के प्रतीक हैं। वह सभी प्रकार के फंदे लगाता है, जिसमें, असावधानी के कारण लोग गिर सकते हैं(2 तीमुथियुस 2:26)।

खोजें और चर्चा करें। शैतान लोगों के किन विशेष आंतरिक क्षेत्रों पर वार करता है? वह ऐसा क्यों करता है?

(1) शैतान झूठा है - वह लोगों के मस्तिष्क पर वार करता है।

पढ़ें यूहन्ना 8:44। शैतान झूठा है और संसार में सभी झूठों का पिता है। वह लोगों के *मस्तिष्क* पर वार करता है। शैतान हर उस झूठ के पीछे है जो लोग इस दुनिया में बताते हैं या विश्वास करते हैं! शैक्षिक पुस्तकों, जन संचार और कुछ राजनीतिक नेताओं, वकीलों और धार्मिक अगुवों के माध्यम से ऐसे कई झूठ के बारे में सोचें जो प्रचारित होते हैं। झूठ का मुकाबला करने का एकमात्र तरीका सत्य को जानना है और स्वयं को उस सत्य के हवाले करना है (यूहन्ना 8: 31-36; 17:17)। ''सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा!''

(2) शैतान परिक्षक है - वह लोगों की इच्छा पर वार करता है।

पढ़ें उत्पत्ति 3: 1-7। शैतान एक परिक्षक है। वह लोगों की *इच्छा* पर वार करता है। शैतान परमेश्वर की इच्छा का पालन करता है और लोगों को परमेश्वर और उसके वचन की अवज्ञा करने को प्रेरित करता है। एक बार जब लोग शैतान के झूठे सुझावों पर ध्यान देने लगते हैं, तो वे अपनी कमजोर इच्छाशक्ति के कारण गलत निर्णय या मार्ग पर चलना आरम्भ कर देते हैं। शैतान के प्रलोभनों का मुकाबला करने का एकमात्र तरीका खुद को परमेश्वर और उसके वचनों के अधीन करना है (याकूब 4:7) और शैतान के झूठे सुझावों का परमेश्वर के सत्य वचनों से जवाब देना है जैसा कि बाइबल में दर्ज है(मत्ती 4:1-11)। ''लिखा है!''

(3) शैतान दोष लगाता है - वह लोगों के विवेक पर हमला करता है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:10। शैतान दोष लगाने वाला है। वह लोगों के *विवेक* पर वार करता है। शैतान की रणनीति पहले लोगों को पाप करने के लिए उकसाना और फिर तुरंत उनके विरुद्ध होकर परमेश्वर के समक्ष उन्हे दोषी ठहराना है। क्योंकि मसीह सच्चे मसीहियों के सभी पापों के लिए मर गया, अत: उनके विरुद्ध शैतान का आरोप अब मान्य नहीं है(इब्रानियों 8:12)। फिर भी, शैतान सच्चे मसीहियों पर आरोप लगाता रहेगा, क्योंकि वह चाहता है कि वे झूठें अपराध की भावना, लज्जा या दण्ड के डर से ग्रस्त हों। शैतान के झूठे आरोपों का विरोध करने का एकमात्र तरीका यह है कि आप इस बात पर विश्वास लायें कि मसीह आपके पापों के लिए मर गया और आप अपने जीवन व गवाही के माध्यम से उसकी सेवा करना जारी रखें (प्रकाशितवाक्य 12:11)। ''वे मेमनें के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवंत हुए।''

(4) शैतान एक दासत्व-स्वामी है - वह लोगों की भावनाओं पर वार करता है।

पढ़ें इब्रानियों 2:14-15 । शैतान एक दासत्व-स्वामी है। वह लोगों की *भावनाओं* पर वार करता है। वह *मृत्यु के* डर से इस संसार में लोगों को गुलामी की गिरफ्त में रखता है। क्योंकि लोग मृत्यु के भय में जीते हैं या मरे हुए लोगों से डरते हैं, वे अपने आप को हर उस चीज के लिए समर्पित कर देते हैं जिसके कारण वे

लंबे समय तक जीवित रह सकते हैं। कुछ मसीह चर्च में तथाकथित संतों की उपासना करते हैं। कुछ गैर-मसीह लोग अपने मृत पूर्वजों की आत्माओं की उपासना करते हैं या कब्रों पर अनुष्ठान करते हैं या अपने आत्मिक अगुवो की कब्रों तक की यात्रा करते हैं। केवल यीशु मसीह का सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है(1 यूहन्ना 4:17-18)। "प्रेम में भय नहीं होता। वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है।"

(5) शैतान फुसलाने वाला है- वह लोगों को यौन अनैतिकता के लिए बहकाता है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:20-24; 1 कुरिन्थियों 7: 5। शैतान अनैतिक है। वह लोगों के *नैतिक मूल्यों* पर वार करता है। वह लोगों को *यौन अनैतिकता* के लिए लुभाने की कोशिश करता है, खासकर तब जब उनमें संयम की कमी होती है। यौन अनैतिकता हमेशा आंख, मस्तिष्क वरन कुछ विशेष प्रकार के उत्सवों से आरम्भ होती है ।

प्रकाशितवाक्य 2:20-24 में ईजेबेल ने मसीहियों को मसीह से अलग कर दिया और उन्हें घृणित मूर्तिपूजा के लिए बहकाया। उसकी अनैतिकता (ग्रीक: पोर्निया) आत्मिक, नैतिक या यौन सम्बंधी हो सकती थी। उसने एक भविष्यद्वक्ता के रूप में कार्य किया और लोगों को उसके झूठे शिक्षण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उसने उन्हें ''शैतान के तथाकथित गहन रहस्य सिखाएं।'' उसने यह तर्क दिया, ''शैतान को जीतने के लिए आपको सबसे पहले शैतान का अनुभव करना होगा।'' अत: ''एक बेहतर मसीही'' बनने हेतु उसने मसीहियों को इस प्रकार की अनैतिक सभाओं मे घृणित मूर्तिपूजा व यौन सम्बन्धी कार्यों के लिये प्रेरित किया। इस झूठे शिक्षण ने जीवन के ज्ञानवादी (हिंदू) द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित किया जिसमें ''मनुष्य की आत्मा(आवश्यक भाग) उसके शरीर में कैद है (कम आवश्यक भाग)'' और जिसे मुक्त करने की आवश्यकता है। आत्मा को मुक्त करने की विधि हर सम्भव बुराई(विशेष रूप से यौन अनैतिकता) में लिप्त थी। प्रत्येक धर्म या पंथ जो इस द्वैतवाद को मानता है, धर्म के भीतर नैतिकता की अवमानना करता है।

यौन अनैतिकता का मुकाबला करने का एकमात्र तरीका है कि यौन अनैतिकता को न देखें और तुरंत अपने मन में अनैतिक विचारों को काट दें वरन ''हर एक भावना कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बनें'' और उसके वचन का पालन करें(2 कुरिन्थियों 10:5)।

(6) शैतान एक झूठा भविष्यद्वक्ता है - वह लोगों के विश्वास पर वार करता है।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4: 2-4; 2 कुरिन्थियों 11: 2-4; 1 तीमुथियुस 4: 1-3। शैतान धोखेबाज है। वह मसीहीयों के *विश्वास* पर वार करता है। वह गैर-मसीहियों को मसीह धर्म से दूर रखने का बहुत प्रयास करता है। शैतान एक अलग ही मसीह, पवित्र आत्मा और सुसमाचार का प्रचार करके सच्ची उपासना करने वाले मसीहियों को भटकाने का प्रयास करता है। शैतान झूठी शिक्षाओं और झूठे धर्मों का अगुवा है। वह नाममात्र मसीहियों, सांसारिक दार्शनिकों और अन्य धर्मों को मसीह के बारे में ऐसा बोलने के लिए प्रेरित करता है जैसा उसने स्वयं बाइबल में प्रकट नहीं करा ! इस पर काबू पाने का एकमात्र तरीका है ष्हर एक ऊंची बात का, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खंडन करें और हर एक भावना को कैद करके मसीह का अज्ञाकारी बना देंष (2 कुरिन्थियों 10: 4-5)।

हालाँकि शैतान बहुत बुराई करने वाला है, लेकिन हर मनुष्य शैतान के वारों, संसार की बुराईयों या अपने मन की बुराईयों के बारे में प्रतिक्रिया देने का जिम्मेदार है !

3. शैतान बाहरी परिस्थितियों के माध्यम से लोगों पर वार करता है।

खोजें और चर्चा करें। शैतान किन विशेष परिस्थितियों का लोगों पर वार करने के लिए प्रयोग करता है?
ध्यान दें। शैतान लोगों पर वार करने के लिए विभिन्न तरीकों का प्रयोग करता है।

(1) शैतान जाल बिछाता है।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3: 7; 2 तीमुथियुस 2: 23-26। शैतान *जाल बिछाता* है ताकि लोग उसके जाल में गिरें, अर्थात् उसकी अधीन हों। यदि एक नया और अपरिपक्व मसीह को एक अगुवें के रूप में नियुक्त किया जाता है, तो यह हो सकता है कि वो घमंड से भर जाये और यह कल्पना करे कि वह अपने अधिकार के कारण अपनी अपरिपक्वता छिपा सकता है। शैतान भी अपनी बुराई करने के लिए लोगों को विज्ञान (विकास), दर्शन (मार्क्सवाद) और धर्म (गैर-मसीह धर्म, समूह और भोगवाद) के क्षेत्र में उल्झाये रखता है ताकि अपनी इच्छा पूरी करवा सकें।

(2) शैतान चमत्कार का प्रतिकार करता है।

पढ़ें निर्गमन 7:11-12; 2थिस्सलुनीकियों 2: 9-10; प्रकाशितवाक्य 13:13। शैतान अपने *झूठ* पर विश्वास करवाने हेतु चमत्कारों का प्रतिकार करता है। वह कुछ झूठें भविष्यद्वक्ताओं को गलत चमत्कार करने में सक्षम बनाता है। इस तरह वह कई गैर-मसीहियों को यीशु मसीह से दूर रखता है।

(3) शैतान एक स्वर्गदूत होने का ढोंग करता है।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 11:13-15। शैतान ज्योती के दूत के रूप में सामने आता है और धार्मिकता का सेवक होने का *ढोंग* करता है। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि उसके सेवक (झूठे धर्मों के झूठे भविष्यद्वक्ता) भी धार्मिकता के सेवक के रूप में सामने आते हैं और लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए अच्छे काम करते हैं कि उन्हें यीशु मसीह की आवश्यकता नहीं है। वे तथाकथित ''भले कार्य'' (आमतौर पर मसीहियों के स्वभाव का मुकाबला करने के लिए) करते हैं ताकि यह साबित हो सके कि लोगों को मसीह की आवश्यकता नहीं है।

(4) शैतान मसीही चर्च में घुसपैठ करता है।

पढ़ें मत्ती 13: 37-41। शैतान मसीही चर्च में *घुसपैठ* करता है। वह गलत मसीहियों के साथ-साथ उन लोगों को भी चर्च में जोड़ता है जो उनके बीच बुराई पैदा करें। न्याय का दिन स्पष्ट रूप से यह दिखाएगा कि कौन से लोग वास्तविक मसीह थे और कौन झूठे मसीह थे।

(5) शैतान मसीही कार्यों में बाधा डालता है।

पढ़ें 1थिस्सलुनीकियों 2: 17-18; 3:5। शैतान मसीह के सच्चे दूतों को कुछ समय के लिए विभिन्न कस्बों और देशों में *प्रवेश करने से रोकता* है ताकि वे सुसमाचार का प्रचार न कर सकें। वरन मसीहियों को अपने

देश के गरीब, विकलांग और अशिक्षित वर्गों की मदद के लिए धन, साधन और कार्यकर्ता भेजने के लिए भी प्रतिबंध लगाता है। लेकिन अंत: शैतान मसीहियों को पृथ्वी पर किसी भी स्थान में सुसमाचार का प्रचार करने से नही रोक सकता! शैतान मसीह जनों के प्रयासों को निष्फल बनाने का प्रयास भी करता है। वह या तो लोगों को मसीहियों को सताने के लिए उकसाता है और उन्हें यीशु मसीह में अपना विश्वास छोड़ने के लिए मजबूर करता है। या तो वह राजनीतिक और धार्मिक नेताओं को उकसाता है कि वे मसीही चर्च से दूर रहने और अपने धर्म में शामिल होने के लिए शानदार उपहारों के साथ लोगों को लुभायें ।

(6) शैतान मसीहियों को सताता है।

पढ़ें लूका 22: 31-32; प्रकाशितवाक्य 2:10। शैतान मसीहियों को *सताता* है या उनपर गहन परीक्षाएं लाता है: परिवार के एकमात्र पालंकर्ता को बन्धीगृह में डाल देता है या उसे मार डालता है, महिलाओं का बलात्कार करता है, लड़कियों का दास बनने के लिए बंधी बना लेता है, विधालयों में हजारों बच्चों की हत्या करता है वरन पूरे गांवों को जंगलों में रहने को मजबूर कर देता है।

(7) शैतान अधर्म के लिए उकसाता है।

पढ़ें यूहन्ना 8:44; 2थिस्सलुनीकियों 2:8-9; 1 तीमुथियुस 1:8-11। शैतान संसार के हर समाज में कानून व्यवस्था को बिगाड़ कर शांति और व्यवस्था का विरोध करता है। उसे एक हत्यारा कहा जाता है, क्योंकि वह लोगों को एक-दूसरे से नफरत और हत्या करने के लिए उकसाता है। वह राजनीतिक नेताओं, वकीलों, न्यायाधीशों, पुलिस और समाज के अन्य अगुवों के बीच हर सम्भव अराजकता को पैदा करता है। और वह माता-पिता और सामाजिक कार्यकर्ताओं को बाइबल में पाए जाने वाले परमेश्वर के नियमों से विचलित करता है। वह लोगों के स्मरण से दस आज्ञाओं को मिटाने का हर संभव प्रयास करेगा। शैतान परमेश्वर के नैतिक नियमों का विरोध करता है, जो उसने बाइबल में बताए है, क्योंकि ये नियम हत्यारों, विद्रोहीयों, पापियों, अपवित्र और अधार्मिक हत्यारों, अनैतिक लोगों, विकृत व्यक्तियों (समलैंगिक पुरुष), दास व्यापारियों और झूठे लोगों के खिलाफ हैं। वरन उन सबके भी जो सुसमाचार और बाइबल में बताए गए सिद्धांतो के विपरीत है (1तीमुथियुस 1:8-11)।

(8) शैतान वार करने और नष्ट करने के अवसरों की तलाश करता है।

पढ़ें 1 पतरस 5: 8; इफिसियों 6:16। यह पद शैतान की रणनीति का सारांश बतातें हैं। शैतान लगातार मसीहियों के चारों ओर *गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए*। वह कायर है और विशेष रूप से उन युवा मसीहियों पर वार करता है जो अभी तक अपने विश्वास में दृढ़ नहीं हैं या जो आत्म-नियंत्रित या सतर्क नहीं हैं। शैतान लगातार मसीहियों पर जलते तीर चलाता है। ये ष्धधकते हुए तीरष् सताव और सभी प्रकार के विनाश का प्रतिनिधित्व करते हैं, विशेष रूप से मसीहियों की आत्मा पर। ये जलते हुए तीर सभी प्रकार के नकारात्मक विचारों और भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे एक तरफ संदेह, पीड़ा और आत्म-आरोप और दूसरी ओर सभी प्रकार के बुरे विचार और भावनाएं, जैसे वासना, लालच, घमंड और ईर्ष्या। इसलिए पौलूस मसीहियों से परमेश्वर के कवच को पहनने का आग्रह करता है

ताकि वे शैतान की योजनाओं और हमलों के खिलाफ खड़े हो सकें। प्रत्येक मसीही इस बात का जिम्मेदार है कि वह शैतान के ज्वलंत तीरों का जवाब कैसे देता है!

ग. शैतान की सीमाएं

1. शैतान सीमित है।

खोजें और चर्चा करें। शैतान की सीमाएँ क्या हैं?

ध्यान दें। शैतान एक सृजित प्राणी है और इसलिए पूरी तरह से परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ के अधीन है!

(1) शैतान वहाँ तक सीमित है जहाँ तक उसको अनुमति दी गई है।

पढ़ें अय्यूब 1: 6-22; 2: 1-10; प्रकाशितवाक्य 20: 1-3। समस्त पुराने नियम की अवधि के दौरान, शैतान अपनी सामर्थ में वहाँ तक सीमित था जहाँ तक कि परमेश्वर ने उसे *अनुमति* दी थी। उदाहरण के लिए, अय्यूब की पुस्तक में, शैतान को यह अनुमति दी गयी की वह लोगों को अय्यूब के बच्चों और नौकरों को मारने व उनकी सारी संपत्ति नष्ट करने को उकसायें, लेकिन उसे अय्यूब को मारने की अनुमति नहीं दी गयी! इन घटनाओं ने शैतान के वास्तविक इरादों और चरित्र को स्पष्ट रूप से प्रकट किया। शैतान एक हत्यारा और विनाशक है। लेकिन पुराने नियम मे शैतान को परमेश्वर ने अनुमति से अधिक नुकसान करने की स्वतंत्रता नहीं दी। 2000 साल पहले मसीह के आगमन के समय, शैतान इतना बाध्य था कि वह अब राष्ट्रों को धोखा नहीं दे सकता था। वह मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले तक बंधा रहेगा।

(2) शैतान उस तक सीमित है जो उसके पास है और प्रभावित करता है।

पढ़ें उत्पत्ति 3:15; भजन. 2; मत्ती 11:27; 28:18; इफिसियों 1:20-23। लूका 4:5-6 और 1 यूहन्ना 5:19 के आधार पर, कुछ मसीहियों का कहना है कि शैतान इस पूरे वर्तमान संसार का मालिक है और वह इसे इस हद तक नियंत्रित करता है कि वह इसे अपनी इच्छा से किसी को भी भेंट कर सकता है। हालांकि, शैतान दावा करता है कि वह इस दुनिया का असली मालिक है और इस दुनिया में हर चीज पर राज करने वाला है, परन्तु यीशु कहता है कि शैतान झूठा है(यूहन्ना 8:44)। इस तरह के बाइबल सन्दर्भ निश्चित रूप से यह साबित नहीं करते हैं कि शैतान राष्ट्रों का परम स्वामी और शासक है, जो अपनी चाहत के अनुसार अपने अधिकार और धन का निपटान कर सकता है, ताकि यीशु मसीह को स्वयं कम से कम इस वर्तमान काल में, उससे हारना पड़े।

इसके विपरीत सच्चाई है, जैसा कि बाइबल द्वारा बहुतायत से सिद्ध किया जाता है। शैतान नहीं, वरन बाइबल का परमेश्वर हमेशा के लिए राज करता है और उसका राज्य युगानयुग का है (भजन 145: 13; 146; 10)! शैतान को नहीं, बल्कि यीशु मसीह को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18; यूहन्ना 13: 3; प्रकाशितवाक्य 1: 5)!

हालाँकि, ''पूरी दुनिया[2] उस दुष्ट के वश में है'' (1 यूहन्ना 5:19), ''हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है (मतलब जिसका मसीह में पुन: जन्म हुआ है), वह पाप नही करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ (अर्थात यीशु मसीह के द्वारा), उसे वह बचाये रखता है, और वह दुष्ट उसे छू नही पाता'' (1 यूहन्ना 5:18)! ''दुनिया'' यहाँ पूरी पृथ्वी का सन्दर्भ नहीं है, बल्कि केवल बुराई की दुनिया का सन्दर्भ है, जो शैतान के प्रभाव का क्षेत्र है। केवल वह दुनिया जो परमेश्वर और मसीह का विरोध करती है और मसीहियों को सताती है बुराई के नियंत्रण में है। शैतान के पास केवल गैर-मसीही और अवज्ञाकारी मसीहियों पर अधिकार है। पुन: जन्म (आज्ञाकारी) मसीहियों पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है!

(3) शैतान सामर्थ में सीमित है।

पढ़ें मत्ती 8:16; प्रेरितों के काम 16:16-18; रोमियों 16:20; प्रकाशितवाक्य 12: 7-9; 20: 1-3। हालाँकि शैतान अभी भी दुनिया में सभी गैर-मसीहियों, अविश्वासियों और बुरे लोगों के जीवन पर और सभी बुरी आत्माओं पर बुराई के लिए एक बहुत शक्तिशाली प्रभाव डालता है, लेकिन वह सर्वशक्तिमान नहीं है। उसके ताकतों को लगातार मसीह और मसीहियों द्वारा भगाया जाता है। बाइबल बताती है कि उसे स्वर्गदूत मीकाईल द्वारा पहले से ही स्वर्ग(हवा) से बाहर निकाल दिया गया है, और वह पृथ्वी पर बंध गया है (प्रकाशितवाक्य 20:1-3 में यीशु मसीह का प्रतीक), ताकि अब वह राष्ट्रों को धोखा नहीं दे सकें।

परमेश्वर शैतान से बिल्कुल अलग है। वह शैतान की तुलना में अतुलनीय है। जबकि परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है, शैतान नहीं है। इसके अलावा, पृथ्वी पर शैतान का राज्य यीशु मसीह द्वारा तोड़ दिया गया है। उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया(कुलुस्सियों 1:13)।

लेकिन, हालाँकि शैतान पहले से ही पराजित शत्रु है, लेकिन यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उसे सांसारिक दृश्य से नहीं हटाया है। शैतान अभी भी बुराई के लिए एक बहुत शक्तिशाली प्रभाव रखता है। उसको केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन सांसारिक दृश्य से हटा दिया जाएगा।(प्रकाशित्वाक्य 20:10)

2. शैतान बाध्य है।

(1) यीशु मसीह ने देहधारण के द्वारा शैतान को बांधना प्रारम्भ कर दिया।

खोजें और चर्चा करें। यीशु के जन्म के दौरान शैतान के बंधन के बारे में नया नियम क्या सिखाता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने 2000 साल पहले अपने देहधारण के द्वारा शैतान को अपने पहले आगमन पर ही बांधना शुरू कर दिया था। मत्ती 12:28; इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8। यीशु मसीह का अपने मानव स्वभाव में पृथ्वी पर प्रकट होने का कारण यह था:

- शैतान को बांधना (यूनानी: deó)[3] (मत्ती 12:28)
- शैतान को नष्ट करना (उसे शक्तिहीन बनाना, उसे हटाना)(ग्रीक: katargḛ)(इब्रानियों 2; 14)

- शैतान के कार्य को नष्ट करना (समाप्त करना)(यूनानी: luó) (1 यूहन्ना 3:8)।

उस पूरी अवधि के दौरान जब यीशु मसीह पृथ्वी पर लोगों के बीच (उनके अवतार) रहें, तो उनका शैतान और उसके राक्षसों की सारी शक्ति पर अधिकार था और उसने शैतान की ताकतों को परमेश्वर की आत्मा के द्वारा बाहर निकाला। शैतान को मसीह ने अधिकार से अधिक स्वतंत्रता नहीं दी।

पढ़ें लूका 10:18-20। यीशु ने उस अधिकार को अपनी मण्डली को भी दिया। लूका 10:18-20 में, यीशु कहता है, "मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।" यीशु का अर्थ था कि जब उसके चेले भीड़ से दुष्ट आत्माओं को निकाल रहे थे, तब मसीह ने अपने गुरु, शैतान, को अपनी महिमा से दुनिया में गिरते हुए देखा। शैतान का पतन ''बिजली की तरह'' था, अचानक, चौंकाने वाला। चेलों को शायद इस विजय की उम्मीद नहीं थी और शायद शैतान को भी अपनी हार का अनुमान नहीं था। यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर जो होना शुरू हुआ वह यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक जारी रहेगा, जब शैतान अंत में नर्क में हार जाएगा!

(2) यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और अंत्येष्टि के द्वारा शैतान को बाध्य रखा।

खोजें और चर्चा करें। नया नियम यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और अंत्येष्टि द्वारा शैतान के बंधन के बारे में क्या सिखाता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और अंत्येष्टि द्वारा शैतान का बंधन पूरा किया।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:1-9। यूहन्ना ने शैतान के ऊपर यीशु मसीह की विजय को सुसमाचार की भाषा में वर्णित किया है।

- पुराने नियम की अवधि के दौरान, शैतान ने मसीही वंश को नष्ट करने की कोशिश की थी ताकि मसीह के जन्म को रोका जाये (प्रकाशितवाक्य 12: 1-4)।
- जब यीशु मसीह का जन्म हुआ, तो उसे परमेश्वर और उसके सिंहासन तक पहुँचाया गया (प्रकाशितवाक्य 12:5)। यह सिहांसन तक पहुचाया जाना यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और प्रवेश का एक मुखर चित्र है जो कि मसीह के प्रथम आगमन के अंत मे हुआ। सर्वनाश करने वाली तस्वीर में, अजगर और दुष्ट स्वर्गदूतों की सेना ने उसे पकड़ने के लिए स्वर्ग तक का प्रयास किया।
- मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर ओर उसके दूत उस से लड़े और उन्हें स्वर्ग से बाहर निकाल दिया (प्रकाशितवाक्य 12: 7-7)। स्वर्गदूतों और शैतान की ताकतों के बीच यह युद्ध ''स्वर्ग में'' हुआ था, अर्थात, उस स्वर्ग में नहीं जहाँ परमेश्वर वास करता है, बल्कि आकाश या वायुमण्डल में हुआ। चूँकि एक से अधिक ''स्वर्ग'' हो सकते हैं(2 कुरिन्थियों 12: 2), उच्च स्वर्ग में स्वर्गदूतों का वास होता है, जहाँ परमेश्वर रहते हैं (मत्ती 22:30;

प्रकाशितवाक्य 18: 1), और शैतान और उसके दूत न्यूनतम स्वर्ग में रहते हैं, पृथ्वी के चारों ओर के आकाश या वातावरण में (लूका 10:18; 1 कुरिन्थियों 8: 5; इफिसियों 2: 2; 6:12)।

फिर भी, स्वर्ग में इस लड़ाई और अजगर और उसके राक्षसों के नीचे गिरनें के लाक्षणिक रूप को समझा जाना चाहिए। शैतान ने मसीहियों की अभियोजना के कारण से स्वर्ग में अपना स्थान खो दिया (अय्यूब 1: 6-12)। क्योंकि मसीहियों के पापों का प्रायश्चित किया जा चुका है और मसीहियों को शैतान के प्रभुत्व से मुक्त किया गया है (कुलुस्सियों 1:13), शैतान ने मसीहियों के खिलाफ अपने आरोपों के लिए न्याय का हर सदुपयोग खो दिया है। हालाँकि वह मसीहियों पर आरोप लगाना जारी रखता है, लेकिन वह अब यीशु मसीह के अधूरे काम की ओर इशारा नहीं कर सकता है!

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:1-3। इस गद्यांश में प्रकाशितवाक्य 12: 7-9 में "शैतान के बन्धन" के समान घटना का वर्णन है। मत्ती 12:29 में भी ''बान्धने'' (ग्रीक: डेओ)के लिए ठीक उसी ग्रीक शब्द का उपयोग किया गया है। शैतान का बंधन उसे नपुंसकता की स्थिति में नही लाता, लेकिन एक ऐसी स्थिति पैदा करता है जिसमें शैतान अब ''राष्ट्रों को धोखा देने'' में सक्षम नहीं है। शैतान अब अन्यजातियों को सुसमाचार सुनने और मसीह की ओर फिरनें से रोक नही सकता ! शैतान भी परमेश्वर के लोगों (मसीहियों) के विरुद्ध युद्ध के लिए राष्ट्रों को इकट्ठा करने में असक्षम है!

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आलंकारिक भाषा का उपयोग करती है: ''शैतान का बंधन'' अर्थात उसके प्रभाव पर अंकुश लगा दिया गया है (थामना, सीमित)। इसका मतलब यह नहीं है कि शैतान लोगों को नुकसान पहुँचाने में पूरी तरह असामर्थ है, क्योंकि बाकी नए नियम (मत्ती 12:29 के बाद) से पता चलता है कि वो अब भी बहुत बुरा प्रभाव डालने समर्थ है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 13 और 17 (प्रकाशितवाक्य 12:7-9 के बाद) से पता चलता है कि शैतान अभी भी अपने दूतों, विरोधी, झूठे नबी और महान वेश्या के माध्यम से बुराई का बहुत प्रभाव डालता है।

मसीह के पहले से दूसरे आगमन तक पूरे नए नियम की अवधि के दौरान:

- शैतान बाध्य रहता है
- सुसमाचार का दुनिया भर में प्रचार किया जा रहा है (मत्ती 24:14)
- सभी मसीही जो सो गये है स्वर्ग में मसीह के साथ राज्य करते है (प्रकाशितवाक्य 20:4-6; फिलिप्पियों 1:23)।

मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले, शैतान को उसकी कैद से रिहा किया जाएगा। मसीह के दूसरे आगमन के दौरान उसके और शैतान के बीच अंतिम युद्ध के बाद (प्रकाशितवाक्य 16:14,16; 17:14; 19:17-21; 20:7-10), शैतान को नरक में पहुँचा दिया जाएगा, जहाँ उसे हमेशा के लिए सताया जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:7-10)।

3. शैतान बंधा हुआ है।

(1) यीशु मसीह लगातार मसीहियों के सेवा और प्रचार कार्य द्वारा शैतान को बांधने का काम करते हैं।

खोजें और चर्चा करें। शैतान को बांधकर रखने के बारे में नया नियम क्या सिखाता है?

पढ़ें मत्ती 12:29-30। यीशु मसीह कहते हैं, ''क्या कोई किसी ताकतवर आदमी के घर में घुसकर उसका सामान तब तक लूट सकता है जब तक कि वह पहले उस आदमी को पकड़कर बाँध न दें?'' यीशु शैतान को वह "बलवान पुरुष" मानता है। यीशु मसीह न केवल शैतान को बांधने के अपने काम के बारे में नही बताया, वरन उन मसीही सहकर्मियों के माध्यम से शैतान को बंधे रखने के अपने निरंतर काम के लिए भी बताया है। उनकी प्रार्थनाओं, सुसमाचार प्रचार और शिक्षण के द्वारा(2 तीमुथियुस 2: 24-26), मसीही लोग शैतान (और उसके राक्षसों) को बांधे (बंधे हुए) रख रहें हैं और लोगों को उसके वश से छुडा रहें हैं, जिन्हें वह पहले नियंत्रित करता था। मसीह और शैतान के बीच इस संघर्ष में, तटस्थता असंभव है। सभी मसीही सेवक जो मिशनरी और प्रचार कार्य के माध्यम से लोगों को इकट्ठा करते हैं वे परमेश्वर के राज्य में मसीह के साथ हैं। और सभी लोग जो शैतान के लिए एक आसान शिकार के रूप में दूसरों को छोड़ देते हैं, वे मसीह के विरुद्ध हैं (मत्ती 12:30)।

पढ़ें यूहन्ना 12:31-32 । यीशु कहता है, "अब इस दुनिया का न्याय किया जा रहा है और इस दुनिया का सरदार निकाल दिया जाएगा। और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो मैं सब को अपने पास खीचूंगा।" यीशु शैतान को "इस दुनिया के सरदार" के रूप में देखता हैं। इस पद में ''दुनिया'' का अर्थ सिर्फ इस संसार और इसमें पाए जाने वाले हर एक व्यक्ति के साथ नहीं है, लेकिन केवल बुरे लोगों के पूरे समाज के लिए हैं, जो परमेश्वर से अलग हो गए हैं और जिन्होंने यीशु मसीह का विरोध किया, अस्वीकार किया, धोखा दिया और की निंदा की (यूहन्ना 15: 18-25; 1 यूहन्ना 5: 18-19)। ष्राजकुमारष् का तात्पर्य है कि शैतान कुछ विशेष शक्ति का प्रयोग करता है, लेकिन क्योंकि वह राजाओं का राजा नहीं है, इसलिए उसकी शक्ति उन दुष्ट लोगों और बुरी आत्माओं तक सीमित है जो उसे अपनी निष्ठा देते हैं। जब यीशु अपने ष्उठाए जानेष् की बात करता है, तो वह उन ऐतिहासिक घटनाओं अर्थात क्रूस की मृत्यु, मृतकों में से उसके जी उठने, स्वर्ग में उसके स्वर्गारोहण और स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर के दाहिने हाथ में उसके प्रवेश की चर्चा करता है। प्रकाशितवाक्य 12: 5 में यह "उठाने" को "छीनने" के रूप में चित्रित किया गया है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:10-17। यीशु ने शैतान को ''अजगर'' के रूप में चित्रित किया है। शैतान ''औरत'' का पीछा करता है।

- प्रकाशितवाक्य 12: 1-5 में, महीला *पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों की एक तस्वीर है* (इस्राएल, जिसे भजन 107: 32 में ''चर्च'' कहा जाता है)। इस्राएल का कार्य मसीहा को उजागर करना था!
- प्रकाशितवाक्य 12: 6,13-18 में महिला *नये नियम में परमेश्वर के लोगों की तस्वीर है* (चर्च जिसे गलातियों 6:16 में ''इस्राएल'' भी कहा जाता है) और ''जो यीशु की गवाही को प्रस्तुत करती है'' (प्रकाशितवाक्य 12:17)। मसीह के पहले आगमन के बाद, कलीसिया को उसके सबसे प्रत्यक्ष

और घातक हमलों से बचाया जाता है(प्रकाशितवाक्य 12:6,13-14)। शैतान अपने कभी न खत्म होने वालें झूठ से कलीसिया को तोड़ने की कोशिश करता है, लेकिन कलीसिया को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता क्योकि मसीह कलीसिया की सहायता करता है (प्रकाशितवाक्य 12:15-16)। इसलिए शैतान अपने हमलों को "स्त्री की संतान" पर केंद्रित करता है, यानी अलग-अलग मसीहियों पर (प्रकाशितवाक्य 12:17)। लेकिन इन अलग-अलग मसीहियों ने शैतान को "मेम्ने के लहू से" हरा दिया है। अर्थात, वे मानते हैं कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने उन्हें न केवल शैतान के पाप और शक्ति से मुक्त किया था, वरन शैतान को भी बाध्य किया था। मसीही लोग शैतान को ''अपनी गवाही के शब्द'' से दूर करते हैं। अर्थात, वे उसे अपनी सेवा और इंजीलवादी काम से दूर करते हैं, जो लोगों को शैतान के चंगुल से बचा ले आता है जिन्हे उसने पहले नियंत्रित किया था(कुलुस्सियों 1:13)। और मसीहियों ने शैतान को इस तथ्य से दूर किया कि वे मसीह के लिये अपनी जान देने से भी नहीं डरते(प्रकाशितवाक्य 12:11)।

यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्ग में प्रवेश ऐतिहासिक घटनाएं हैं। जो पहले "दुष्ट संसार का फैसला" करती हैं जिसके ऊपर शैतान राज करता है। दूसरी वे ष्शैतान के इस दुनिया के राजकुमारष् तथ्य का खण्डन करती हैं । मसीह के पहले आगमन से पूर्व जो उच्च पद शैतान का होगा उसे उसने हमेशा के लिए खो दिया । यीशु मसीह के पूर्ण उद्धार कार्य और मसीहियों की साक्षी द्वारा शैतान को इस संसार के राज्यो पर अपनी पकड़ गवानी पड़ी (दानिय्येल 10:13,20)। यही कारण है कि दुनिया के सभी देशों के लोगों को मसीह (यूहन्ना 12:32) की ओर आकर्षित करना उसी समान है जिस तरह से शैतान ने इन राज्यो से बाहर करना (यूहन्ना 12:31)!

(2) यीशु मसीह पार्थिव दृश्य के अंत में शैतान को हटा देगा।

खोजें और चर्चा करें। शैतान के सांसारिक दृश्य से निष्कासन के बारें में नया नियम क्या सिखाता है? ***पढ़ें*** प्रकाशितवाक्य 20:7-15। हालांकि, शैतान पहले से ही हारा हुआ है, लेकिन यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उसे सांसारिक दृश्य से नहीं हटाया है। प्रकाशितवाक्य 20:7-15 कहता है कि यह मसीह के दूसरे आगमन के अंतिम निर्णय के दिन होगा। तब यीशु मसीह शैतान को हमेशा के लिए नरक में डाल देंगे।

ड. शैतान के विरुद्ध युद्धनीति

पढ़ें इफिसियों 6:10-18।

1. मसीही लोग एक आध्यात्मिक युद्ध लड़ते हैं।

सिखाएं। आत्मिक युद्ध क्या है?

(1) आत्मिक युद्ध लोगों के खिलाफ नहीं लड़ा जाता है।

बाइबल कहती है कि मसीहियों का संघर्ष मांस और रक्त के लोगों के खिलाफ नहीं है, बल्कि वास्तव में बुरी आध्यात्मिक ताकतों के खिलाफ है (इफिसियों 6:12)। मसीही जन लोगों के खिलाफ पवित्र युद्ध नहीं

लड़ते हैं, लेकिन बुरी आत्माओं के खिलाफ आत्मिक युद्ध करते हैं। शासक, अधिकारी और शक्तियां विभिन्न प्रकार की बुरी आत्माएं हैं जो शैतान के नियंत्रण में हैं और जो इस दुनिया में बुरे लोगों के माध्यम से काम करते हैं।

शैतान की तरह, ये बुरी आत्माएं निकाले हुए स्वर्गदूत हैं। यही कारण है कि शैतान और उसकी बुरी आत्माएँ जीवित परमेश्वर का विरोध करती हैं और आज लोगों में उसके काम को नष्ट करने की कोशिश करती हैं। यही कारण है कि दुनिया में बुरी राजनीतिक ताकतें अक्सर अन्य धर्मों के साथ सहयोग करती हैं, जबकि वे मसीही धर्म के बहुत प्रतिकूल हैं। यीशु ने कहा, "मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है। अगर मेरा राज इस दुनिया का होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाए। मगर सच तो यह है कि मेरा राज इस दुनिया का नहीं।" (यूहन्ना 18:36)। इसीलिए सच्चे मसीही कभी भी किसी भी लोगों के खिलाफ पवित्र लड़ाई नहीं लड़ते हैं।

(2) आत्मिक युद्ध मानव हथियारों से नहीं लड़ा जाता है।

आत्मिक युद्ध शैतान और उसकी बुरी आत्माओं(2 कुरिन्थियों 2:11) की योजनाओं और गतिविधियों के खिलाफ सक्रिय रूप से लड़ने के लिए है। आत्मिक युद्ध कभी भी मानवीय हथियारों से नहीं, बल्कि आत्मिक हथियारों से लड़ा जा सकता है। बाइबल सिखाती है, "हालाँकि हम भी इस दुनिया में रहते हैं, मगर हम दुनियावी तरीके से युद्ध नहीं लड़ते। क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार दुनियावी नहीं हैं, बल्कि ऐसे शक्तिशाली हथियार हैं जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं ताकि हम गहराई तक समायी हुई बातों को जड़ से उखाड़ सकें। हम ऐसी दलीलों को और हर ऐसी ऊँची बात को जो परमेश्वर के ज्ञान के खिलाफ खड़ी की जाती है उलट देते हैं और हरेक विचार को जीतकर उसे कैद कर लेते हैं ताकि उसे मसीह की आज्ञा माननेवाला बना दें "(2 कुरिन्थियों 10:3-5)! मसीही लोग आत्मिक कवच पहनकर आत्मिक युद्ध लड़ते हैं (इफिसियों 6:10-18)।

(3) आत्मिक युद्ध लोगों पर निर्भरता में नहीं लड़ा जाता है।

कुछ दुष्ट आध्यात्मिक और राजनीतिक नेताओं की शक्ति, धन और योजनाओं पर भरोसा करके आत्मिक युद्ध को गैर-मसीही धर्मों के युद्ध की तरह नहीं लड़ा जा सकता है। आत्मिक युद्ध केवल बाइबल के परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा करके लड़ा जा सकता है, जिन्होंने खुद को यीशु मसीह के रूप में प्रकट कियो।

- आत्मिक युद्ध का उद्देश्य कभी भी इस धरती पर अधिक क्षेत्र या नियंत्रण को जीतना नहीं है, लेकिन हमेशा शैतान और उसकी बुरी आत्माओं के हमलों के सामने खड़े रहना है। (इफिसियों 6:13)
- आत्मिक युद्ध का उद्देश्य लोगों को शैतान, बुरी आत्माओं और बुरे लोगों के नियंत्रण से दूर करना भी है (कुलुस्सियों 1:13; 2 तीमुथियुस 2:26)।

2. मसीहियों को इस आत्मिक युद्ध के लिए अच्छी तैयारी करनी चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। आत्मिक कवच का प्रत्येक अंश क्या दर्शाता है?

ध्यान दें।

(1) सच्चाई का पट्टा ।

यह आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए सैनिक का दृढ़ निश्चय है। यह आत्मिक युद्ध और परमेश्वर के सत्य के संबंध में उनकी ईमानदारी का प्रतिनिधित्व करता है जिससे वह झूठ पर विजय पा सकें । मसीही लोग कहते हैं, ष्मैं ईमानदारी से शैतान और उसकी ताकतों के खिलाफ आत्मिक लड़ाई लड़ने और उनके झूठ के खिलाफ सच्चाई से लड़ने के लिए दृढ़ हूं।ष गिदोन और उसके तीन सौ सैनिकों की तरह, एक पाखंडी की तुलना में ईमानदार और सच्चा व्यक्ति अन्य लोगों को प्रभावित करने की अधिक क्षमता रखता है।

(2) धार्मिकता का कवच।

यह आत्मिक युद्ध लड़ने की सैनिक *क्षमता* है। यह आत्मिक युद्ध में उनकी प्रभावशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। मसीही लोग कहतें है, ''मैं एक धर्मी जीवन जीने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं जो मुझे आत्मिक युद्ध में प्रभावी रूप से संलग्न करने में सक्षम करेगा।'' धर्मी होने का अर्थ है कि जैसा बाइबल में बताया गया है हमें परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में खड़े रहना और सही तरीके से रहना हैं। केवल एक धर्मी व्यक्ति ही स्थायी अच्छा प्रभाव रख सकता है। नूह की तरह, एक धर्मी व्यक्ति पापी पीढ़ी के बीच परमेशवर के साथ चलना जारी रखता है।

(3) तैयारी के जूते।

यह आत्मिक युद्ध में तुरंत कार्य करने की सैनिक की तत्पर्ता हैं। वे आत्मिक युद्ध के लिए उसकी तैयारियों और तत्परता का प्रतिनिधित्व करते हैं। मसीही लोग कहतें है, ''मैं आत्मिक युद्ध में लड़ाई लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार और तुरंत तैयार हूं।'' उनका सोते हुए नहीं पकड़े जाने के लिए दृढ़ संकल्प है। विश्वासयोग्य और बुद्धिमान प्रबंधक की तरह, जिन्हें स्वामी ने अपने कर्मचारियों को उचित समय पर भोजन का भत्ता देने के लिए लगाया था, जब स्वामी लौटता हैं तो उसे ऐसा करते हुए ही पाता हैं (लूका 12:42-43)।

(4) विश्वास की बड़ी ढाल।

यह आध्यात्मिक युद्ध में स्वयं की रक्षा करने की सैनिक की क्षमता है। यह परमेश्वर के वादों में उसके विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है जब वह आत्मिक युद्ध में संलग्न होता है। मसीही लोग कहते हैं, ''मैं परमेश्वर के वचन में विश्वास करके शैतान के हमलों के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए दृढ़ हूं।'' शैतान के धधकते तीर उसके उत्पीड़न और परेशानियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनमें संदेह, भय, पीड़ा, लालच, घमंड, घृणा, ईर्ष्या, वासना पैदा करते हैं। मसीही का विश्वास परमेश्वर के शब्दों और वादों पर खरा है और वह इस आश्वासन के आधार पर कार्य करता है।

(5) उद्धार का टोप।

यह आध्यात्मिक युद्ध में अपने विचारों और भावनाओं की रक्षा करने की सैनिक की क्षमता है। यह आत्मिक युद्ध में परमेश्वर के उद्धार और अंतिम जीत के उनके आश्वासन का प्रतिनिधित्व करता है। मसीही लोग

कहते हैं, ''मैं शैतान के हमलों के खिलाफ परमेश्वर के वादों के साथ अपने मन और विचारों की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित हूं।'' जो ज्ञान खुद परमेश्वर जिसके लिए लड़ रहे हैं (निर्गमन 14:14), कि जब वह आग और पानी में से जायेगा तो परमेश्वर उसके साथ रहेगा। (यशायाह 43:2) और यह कि परमेश्वर उसे सताए जाने और कष्टों से छुड़ाएगा (2 तीमुथियुस 3:11), इस लड़ाई को जारी रखने के लिए मसीही सैनिक को काफी मजबूत बनाता है। यह विश्वास कि परमेश्वर ने मसीह में एक अच्छा काम शुरू किया था, उसे पूरा करने के लिए आगे बढ़ेगा (फिलिप्पियों 1:6), उसे लड़ाई में दृढ़ रहने के लिए मजबूत बनाता है।

(6) आत्मा की तलवार।

आत्मिक युद्ध के दौरान शैतान के प्रलोभनों और जाल से बचने के लिये सैनिक का साधन है। यह आध्यात्मिक युद्ध में विजय प्राप्त करने की उनकी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। आत्मा की तलवार बाइबल के वचन हैं क्योंकि उनका उपयोग जीवन की विभिन्न स्थितियों में किया जाता है। मसीही लोग कहते हैं, ''मैं आत्मिक युद्ध में अपने सभी युद्धों में परमेश्वर के वचनों का उपयोग करने के लिए दृढ़ हूं।'' जब तक एक मसीही परमेश्वर के वचनों का सही उपयोग करते हैं, पवित्र आत्मा लोगों के पाप (इफिसियों 5:11) को उजागर करने के लिए बाइबल के वचनों का उपयोग करेगा, उन्हें दोषी ठहराने के लिए (यूहन्ना 16:8), सच्चाई के खिलाफ अपने तर्कों का खंडन करने के लिए (तीतुस 1: 9), उन्हें परमेश्वर का सच समझाने के लिए (प्रेरितों के काम 17:2-4), उनकी शंकाओं को दूर करने के लिए (यूहन्ना 20:27-31), अपने डर को दूर करने के लिए (मत्ती 14: 27-30), शैतान को भगाने के लिए (मत्ती 4:1-11) और उस रास्ते को सीधा करने के लिए जिसमें उन्हें चलना चाहिए (भजन 119:105)।

(7) प्रार्थना आत्मिक युद्ध का एक हिस्सा है।

प्रार्थना आध्यात्मिक युद्ध के दौरान परमेश्वर के साथ सीधे संपर्क में रहने की सैनिक की क्षमता है। यह आत्मिक युद्ध के दौरान परमेश्वर पर उनकी निर्भरता का प्रतिनिधित्व करता है। मसीही लोग कहते हैं, ''मैं पूरे आत्मिक युद्ध में प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर पर निर्भर रहने के लिए दृढ़ हूं।'' प्रार्थना के माध्यम से, परमेश्वर मनुष्य की समस्याओं को अवसरों में बदल देता है!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को **प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।** इस बात का ध्यान दें कि आप बच्चे का पालन पोषण करते समय आप बाइबल के सिद्धान्तों को उसके जीवन के आधार के रूप में इस्तेमाल करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रकाशितवाक्य 12-14 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(19) यूहन्ना 17:15।**
रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 21 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का **अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।